मसीहयत और धर्म

फ्रैंकलीन द्वारा अध्ययन

क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते है, यहां तक कि वे निरूत्तर हैं। रोमियों 1:20

- आरम्भ के समय से ही, जब मनुष्य तारों को देखता और पृथ्वी की सब वस्तुओं को देखता है, तो उसे सहज रुप से यह ज्ञान हो जाता है कि सृष्टिकर्त्ता है।

उसने उनके मनों में अनन्तता का ज्ञान भी उत्पन्न किया है, फिर भी वे उन कामों को समझ नहीं सकते जो परमेश्वर ने आदि से अन्त तक किए हैं। सभोपदेशक 3:11

- हर एक मनुष्य के मन की गहराईयों में अनन्त जीवन की खोज के लिए तथा परमेश्वर के ज्ञान के लिए इच्छा रहती है।

- सृष्टिकर्त्ता और अनन्त जीवन की यह खोज धर्म की उत्पत्ति है।

धर्म आस्था, मान्यता और प्रथाओं पर आधारित मनुष्य या मनुष्यों की शिक्षाओं का गठन है, जिसे कुछ लोगों ने आत्मिक अगुवे के रुप में पहचाना। इस कारण बहुत से धर्म आगे आए तथा उन्होंने इन विषयों पर बढ़ावा दिया जैसेः ईश्वर कौन है, ईश्वर की कैसे उपासना की जाए तथा उसका अनुसरण करने के लिए आवश्यक नियम और उसके साथ भक्ति ताकि किसी विशेष भगवान की कृपा प्राप्त हो जाए।

अधिकांश धर्म मनुष्य के द्वारा स्थापित किए गए हैं जो सत्य के प्रशन को पूर्णतः आलोचनात्मक बना देते हैं।

बाइबल का ध्यानपूर्वक अध्ययन यह प्रकट करता है कि यह वह पुस्तक नहीं जिसे मनुष्यों के द्वारा लिखा जा सकता था, इसलिएः

- मसीहयत मनुष्य का आविष्कार नहीं है।

इस पर ध्यान देः

> बाइबल में छयासठ पुस्तकें हैं जिन्हें चालीस से भी अधिक लोगों ने लिखा जो जीवन के हर क्षेत्र से आते थे, इनमें सम्मलित थे राजा, किसान, दार्शनिक, मछुआरे, कवि, राजनीतिज्ञ, विद्वान आदि। इसे तीन भाषाओं में लिखा गयाः इब्रानी, अरामी और युनानी। इसके विषयों में सैंकड़ों विवादास्पद विषय सम्मलित हैं जिसमें उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक समन्वय और निरन्तरता है।

> यह एकमत और एकत्व की पुस्तक है और इसलिए चमत्कार है। क्योंकि इतने भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमि के चालीस से भी अधिक लेखक, जिन्होंने तकरीबन 1500 वर्षों के अन्तराल में इतने भिन्न-भिन्न विषयों पर पूरी समन्वयता में लिखा, असम्भव कार्य था।
>
> यीशु मसीह के जन्म, सेवकाई, मृत्यु और पुनरुत्थान के विषय में सुस्पष्ट विवरण बताती बहुत सी भविष्यद्वाणियों को सैंकड़ो वर्ष पूर्व किया जाना असम्भव है। बाकि के सभी ''आत्मिक अगुवों'' में से किसी के जीवन का विवरण पहले से भविष्यद्वाणी द्वारा नहीं किया गया। (देखें : www.treasurehisword पर भविष्यद्वाणी और सम्भाव्यता)।
>
> इसका पर्याप्त स्पष्टीकरण है: ''पर पहिले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।। ''2 पतरस 1:20-21

यह मसीहयत को बाकि के सभी धर्मों से अलग करती है जो मनुष्य के साथ उत्पन्न हुए।

बाइबल (एकमात्र सच्चे परमेश्वर से प्रेरित प्रकाशन) मनुष्यों पर एकमात्र सच्चा परमेश्वर को प्रकट करता है और साथ ही सभी मनुष्यों से उसके सम्बन्ध बनाने की इच्छा को भी जिसे हम उसके द्वारा दिए गए बलिदान में देख सकते हैं ताकि यह सम्भव हो सके।

मनुष्यों के धर्म अपने मार्ग, अपनी विधियां, अपने त्याग और नियमों को जिनका अनुसरण धर्मोत्साह भक्ति के साथ करना है स्थापित करते हैं ताकि उन्हें अपने ईश्वर की कृपा प्राप्त हो जाए और सुख-समृद्ध जीवन के लिए आवश्यक आशिषें प्राप्त हो सके।

ऐसा मसीहयत में नहीं है। दी गई आज्ञाएं और नियम परमेश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए नहीं हैं परन्तु सृष्टिकर्त्ता के निर्देश हैं ताकि मनुष्य (उसकी सृष्टि) शान्तिपूर्ण और उन्नत जीवन जी सकें।

परमेश्वर के साथ कृपा प्राप्त करने के मनुष्य के प्रयासों को बाइबल ''कार्य'' कह कर सम्बोधित करती है और इसका ज़िक्र बार-बार अलग-अलग तरीके से करती है:

> उस ने हमारा उद्धार कियाः और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार ... हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। तीतुस 3:5
>
> क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। इफिसियों 2:8

सभी मनुष्यों में धर्म अन्तर्निष्ठ है क्योंकि उनका विवेक उनके पापी स्वभाव को जानता है और अपने सृष्टिकर्त्ता एवम् एक दूसरे के साथ सही सम्बन्ध की आवश्यकता और इच्छा को भी जानता है।

यह मनुष्य के पहले पाप से देखा जा सकता है – आदम और हव्वा :

> तब उन दोनों की आंखे खुल गई, (अब वे एक दूसरे को और हर एक वस्तु को भिन्नता से देखने लगे) और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे है; सो उन्हों ने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये। उत्पत्ति 3:7

- यह मनुष्य के द्वारा किया गया प्रथम धार्मिक कार्य था।
- अपने आपको अपने तरीकों और अपने प्रयत्नों से ढांपने तथा अपने आपको सही बनाने के लिए मनुष्य सहज रुप से धर्म की ओर मुड़ गया।

  मनुष्य का धर्म परमेश्वर के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए प्रयाप्त नहीं है। केवल प्रभु परमेश्वर जानता है कि क्या आवश्यक है, और वह उसका प्रबन्ध करता है जिस प्रकार उसने आदम और हव्वा के लिए किया। वह समस्त मानव जाति के लिए करता है।

"और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिये चमड़े के अंगरखे बनाकर उनको पहना दिए। " उत्पत्ति 3:21

- प्रेम और चिन्ता के कारण परमेश्वर ने मनुष्य के धर्म को अपने उपाय से बदल दिया जो आवश्यक था।

शीघ्र ही आदम की सन्तानों में धर्म ने दुबारा प्रवेश किया:

कैन ने यह सोच कर परमेश्वर के लिए भेंट चढ़ाई कि उसे अच्छी लगेगी परन्तु उसे ग्रहण नहीं किया गया। हाबिल ने वह भेंट चढ़ाई जो वह जानता था कि परमेश्वर को ग्रहणयोग्य होगी जिस प्रकार आदम ने दोनो को बताया था। कैन क्रोधित हो गया और अपने भाई को मार डाला – धर्म का परिणाम। उत्पत्ति 4

- इस संसार के धर्म अकसर उन लोगों को जो उन से सहमत नहीं होते त्याग देते हैं, उनसे घृणा करते हैं और यहां तक कि मार भी डालते हैं।

एकमात्र सच्चा सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का कहना है:

> मैं बलिदान से नहीं पर निष्ठा से, और होमबलि से नहीं परन्तु इससे प्रसन्न होता हूं है कि परमेश्वर का ज्ञान रखा जाए। होशे 6:6

परमेश्वर इस बात से प्रसन्न नहीं होता कि कोई व्यक्ति उसके साथ सम्बन्धों को तुच्छ मानते हुए उसे धार्मिक बलिदानों से बदल डाले। एक मात्र सच्चे परमेश्वर की इच्छा है कि वह जाना जाए, वह चाहता है कि उसके प्रति सच्चाई और विश्वासयोग्य से रहा जाए, न कि किसी भी तरह के मानव संचालित अव्यक्तिगत बलिदानों के द्वारा।

हम सब से प्रेम करने के कारण और हमारी चिन्ता करते हुए, परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को भेजा ताकि वह हमें मार्ग दिखाए और हमें सिखाए। और जब यीशु ने ऐसा किया, तो उसे धार्मिक अगुवों का सामना करना पड़ा तथा उनके साथ निरन्तर समस्याएं आई।

- मत्ती 21:12–13 यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर, उन सब को, जो मन्दिर में लेन देन कर रहे थे, निकाल दिया; और सर्राफों के पीढ़े और कबूतरों के बेचनेवालों की चौकियां उलट दीं। (13) और उन से कहा, लिखा है, कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा; परन्तु तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो।

  - यहां पर और पवित्रशास्त्र में अनेक जगह पर धर्म के प्रति यीशु मसीह का क्रोध देखा जा सकता है।

  - फरीसियों ने दिए गए दिव्य प्रकाशन में से धर्म बना दिया था, और इस प्रकार उन्होंने सत्य और विश्वासयोग्यता को त्याग दिया।

  - सभी धर्म, अपने स्रोत (मनुष्य) के कारण, कई तरह से भ्रष्ट हैं। इसे हम सदियों से आज तक चले आता देख सकते हैं, यहां तक कि बहुत से चर्चों में भी जहां धर्म ने प्रवेश कर लिया है।

- इब्रानियों 10:5–7 इसी कारण वह जगत में आने समय कहता है, कि बलिदान और भेंट तू ने न चाही, पर मेरे लिये एक देह तैयार किया।(6) होम-बलियों और पाप-बलियों से तू प्रसन्न नहीं हुआ। (7) तब मैं ने कहा, देख, मैं आ गया हूं, (पवित्र शास्त्र में मेरे विषय में लिखा हुआ है) ताकि हे परमेश्वर तेरी इच्छा पूरी करूं।

  - समस्त मानवजाति के लिए यीशु मसीह आदर्श हैं। ''उसकी इच्छा'' से अलग कुछ भी करना ऐसी उपासना करना है जो मनुष्य को भली लगती है और यही धर्म है।

- याकूब 1:26–27 यदि कोई अपने आप को भक्त समझे, और अपनी जीभ पर लगाम न दे, पर अपने हृदय को धोखा दे, तो उस की भक्ति व्यर्थ है।

  - शब्द, जबान, सम्बन्धों को चोट पहुंचाते हैं जिसे परमेश्वर धार्मिक गतिविधियों से अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं।

  - धार्मिक गतिविधियां जो सम्बन्धों को हानि पहुंचाती है, लोगों को घायल करती हैं या जो एकमात्र सच्चे परमेश्वर के साथ सम्बन्ध के आड़े या बदले में होते हैं ''ऐसी भक्ति व्यर्थ हैं''।

(27) हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों ओर विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें।।

- इस पद में ''भक्ति'' मूल युनानी भाषा में अर्थ ''विधियों का पालन'' करना है और यही धर्म है।

- हालांकि, इस पद के अनुसार मसीहयत में ''विधियों का पालन'' करनाः

  - ज़रुरतमन्द लोगों से भेंट करना और उनका ध्यान रखना है।

  - शारीरिक और नैतिक रुप से अपने आप को निष्कलंक रखना है।

सर्वप्रथम मसीहयत एकमात्र सच्चे परमेश्वर के द्वारा आरम्भ एक सम्बन्ध है जिसमें वह अपने आपको और अपने प्रेम को सब लोगों पर और सब के लिए प्रकट करता है।

- प्रार्थना परमेश्वर की सुनना और उससे बात करना है। परन्तु यह असानी से और अकसर धार्मिक रीति रिवाज़ बन जाती है।

  यीशु ने कहाः जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये सभाओं में और सड़कों के मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उन को अच्छा लगता है; मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।

  - ऐसा प्रतीत होता है कि सभाओं में प्रार्थना करने से मनुष्य में धर्म बाहर निकल आ जाता है। धर्मवैज्ञानिक शब्दों में लम्बी–लम्बी और ऊंची आवाज़ में प्रार्थना करना सुनने वालों को प्रभावित करता है न कि परमेश्वर को। हम किस तरह से प्रार्थना करते है इसे विचारने और विश्लेषण करने की आवश्यकता हर एक मसीही को है।

(6) परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द कर के अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।

(7) प्रार्थना करते समय अन्यजातियों की नाई बक बक न करो; क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उन की सुनी जाएगी। (8) सो तुम उन की नाई न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या क्या आवश्यक्ता है। मत्ती 6:5–8।।

- बपतिस्मा परमेश्वर से कृपा प्राप्त करने के लिए नहीं परन्तु उसकी आज्ञा मानने की प्रक्रिया है तथा अन्य लोगों के लिए उसके विश्वासी होने के नाते वचनबद्धता और नव–जीवन का क्रियाशील चित्रण है। यह केवल धार्मिक रिवाज़ नहीं परन्तु इसका अर्थ है।

- प्रभु भोज अनिवार्य ''विधि''नहीं है (जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिए यही किया करो। 1 कुरि 11:25)। यह क्रियाशील चित्रण है जो हमारे लिए दिए गए यीशु के बलिदान को तथा उस नई वाचा को जिसमें हमने यीशु मसीह के साथ प्रवेश किया है स्मरण कराता है। ऐसा होता है और अकसर यह मात्र ''रीति रिवाज़'' के समान बन जाता है।

- उपवास : जब तुम उपवास करो, तो कपटियों की नाईं तुम्हारे मुंह पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुंह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवासी जातें; मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।(17) परन्तु जब तू उपवास करे तो अपने सिर पर तेल मल और मुंह धो।(18) ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा पिता जो गुप्त में है, तुझे उपवासी जाने; इस दशा में तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।। मत्ती 6:16–18

  यशायाह 58 स्पष्टता से उपवास के वास्तविक उद्देश्य को प्रस्तुत करता है :
  जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं, वह क्या यह नहीं, कि, अन्याय से बनाए हुए दासों, और अन्धेर सहनेवालों का जुआ तोड़कर उनको छुड़ा लेना, और, सब जुओं को टूकड़े टूकड़े कर देना? (7) क्या वह यह नहीं है कि अपनी रोटी भूखों को बांट देना, अनाथ और मारे मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहिनाना...?

  - उपवास का उद्देश्य सब के साथ अपने सम्बन्ध को सही बनाना, तथा ज़रुरत के समय में अपना भोजन वस्तु त्याग कर दूसरों की सहायता करना।

- सभा में इकट्ठा होना: एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना ने छोड़ें ... (इब्रानियों 10:25)। सभा में इकट्ठा होने की उच्च सलाह है परन्तु यह पूर्णतः अनिवार्य नहीं है। यह एक दूसरे के साथ सम्बन्धों को बढ़ावा देता है।

सच्ची मसीहयत धर्म से भिन्न है क्योंकि:

1. यह मानव अविष्कार नहीं परन्तु लोगों की महत्वता के लिए परमेश्वर का मनुष्य को प्रकाशन है और यह कि वो कैसे परमेश्वर के साथ और एक दूसरे के साथ मेल-मिलाप में रहें और उन्नत हों।

2. मसीही विश्वासी की उत्साहपूर्ण भक्ति का उद्देश्य परमेश्वर की कृपा प्राप्त करना नहीं परन्तु परमेश्वर ने जो कुछ भी उनके लिए किया उसका सम्मान करते हुए धन्यवाद सहित आभार प्रकट करना है।

3. जो लोग मसीहयत से सहमत नहीं होते उन्हें सच्ची मसीहयत त्यागती या घृणा नहीं करती, परन्तु उन तक वह प्रेम, देखभाल, और चिन्ता करते हुए पहुंचती है।

अतः मसीहयत एकमात्र सच्चे परमेश्वर – यीशु मसीह – और उसकी सृष्टि के समस्त लोगों के साथ सम्बन्ध है।

जब मसीहयत का आरम्भ हुआ तब इसे धर्म की तरह नहीं समझा जाता था। उनके पास मन्दिर या परोहित नहीं थे। वे तो केवल छोटे से समुह की तरह घरों में या कहीं और यीशु की शिक्षाओं को समझने, संगति करने और एक साथ प्रार्थना करने के लिए मिला करते थे।

बीती सदियों में अगुवों ने मसीहयत में से धार्मिक तंत्र बना डाला और उसे धर्म या मिश्रण में बदल दिया।

- कैथोलिक समेत समुदायवाद, मसीहयत और धर्म के मिश्रण के उदाहरण हैं।

- धर्म–युद्ध या क्रूसेड मिश्रण का नहीं अपितु धर्म के क्रूरतम रुप का उदाहरण है जो बहके हुए धर्मोत्साह एवम् उसके परिणाम स्वरुप उत्पन्न घृणा को प्रदर्शित करता है।

मत्ती 16:6 "यीशु ने उन से कहा, देखो; फरीसियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहना।"

- फरीसियों का खमीर उनका अपने धर्म के उत्साह और बाकि हर बात के लिए बन्द दिमाग था। इस कारण उनका प्रभु परमेश्वर के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था तथा जो उनके अनुसार नहीं चलता था उन सब को वे तुच्छ समझते थे।

लूका 12:1 वह सब से पहिले अपने चेलों से कहने लगा, कि फरीसियों के कपटरूपी खमीर से चौकस रहना।

- इस सन्दर्भ में "कपट" का अर्थ – "अच्छे कर्म" या रीति रिवाज़ों का पालन करने के कारण पवित्र, धर्मी और भला होने का दावा करना।

- कपट धर्म के साथ आता है और साथ ही अपने से मेल खाता अन्धापन भी लाता है।

उदाहरण के लिएः लूका 18:9–14 और उस ने कितनो से जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और औरों को तुच्छ जानते थे(धर्म के परिणामस्वरुप), यह दृष्टान्त कहा।(10) कि दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए; एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेनेवाला।(11) फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, कि हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं और मनुष्यों की नाई अन्धेर करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेनेवाले के समान हूं।(12) मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूं।

  - उपवास और दशमांश यदि परमेश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए हो या परमेश्वर ने जो कुछ किया उसका आभार प्रकट करने की बजाय मनुष्यों के साथ अपनी स्थिति मज़बूत करने के लिए हो तो यह धार्मिक कार्य बन सकता है। यह दोनो आवश्यक है और होना भी चाहिए परन्तु सही कारणों के लिए।

(13) परन्तु चुंगी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर (जिसे कोई पसन्द नहीं करता), स्वर्ग की ओर आंख उठाना भी न चाहा, वरन अपनी छाती पीट-पीटकर कहा; हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर।(यह धर्म मानने वाला व्यक्ति नहीं था) (14) मैं तुम से कहता हूं, कि वह दूसरा नहीं; परन्तु यही मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया; क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा(जो धर्म बनाता है), वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।।

- फरीसी, जो धर्म के द्वारा अन्धा था और "भला कार्य" कर रहा था, अपने आपको धर्मी के रुप में देख रहा था (जैसे आज के बहुत से धार्मिक लोग हैं)।

- चुंगी लेनेवाले का धर्म नहीं था तथा उसने स्पष्ट रीति से अपने आपको देखा कि वह कौन है, एक पापी। और मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया । 1 तीमुथियुस 1:15

बाइबल स्पष्टता से हमें सिखाती है कि मसीहयत सब लोगों के लिए प्रेम और करुणा के साथ एक सम्बन्ध है जो बड़ी आज्ञा में भी देखा जा सकता है:

मत्ती 22:35–40 और उन में से एक व्यवस्थापक ने परखने के लिये, उस से पूछा। हे गुरु; व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है? उस ने उस से कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।

मसीहयत प्रभु परमेश्वर की मनुष्य के साथ सम्बन्ध बनाने की लगन है तथा उसने मनुष्य को अपने सम्बन्ध में वापस पुनःस्थापित करने के लिए या मेल मिलाप के लिए बड़ा मुल्य चुकाया है।

2 कुरिन्थियों 5:18– 21 और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है।(19) अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उन के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उस ने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है।।(20) सो हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता हैः हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो।(21) जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।।

- मेल–मिलाप का अर्थ है – सही सम्बन्ध का पुनःस्थापित होना

मत्ती 5:43–46 तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था; कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर।(44) परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो।(45) जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे (परिपक्व वाले) क्योंकि वह भलों और बुरों दोनो पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है।

- प्रभु परमेश्वर और सच्ची मसीहयत किसी से भी घृणा या बैर-भाव नहीं रखती, चाहे वह अच्छी है या बुरी, धर्मी है या अधर्मी।

धर्म के साथ यीशु ने निरन्तर समस्या पाईः

लूका 7:30 पर फरीसियों और व्यवस्थापकों ने उस से बपतिस्मा न लेकर परमेश्वर की मनसा को अपने विषय में टाल दिया।

- यूहन्ना का बपतिस्मा उनके पापी होने की स्वीकृति थी।
- उनके धर्म ने उन्हें सत्य के प्रति अन्धा कर दिया। और आज भी वह यही करता है।

लूका 7:36-50 फिर किसी फरीसी ने उस से विनती की, कि मेरे साथ भोजन कर; सो वह उस फरीसी के घर में जाकर भोजन करने बैठा।(37) और देखो, उस नगर की एक पापिन स्त्री यह जानकर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, संगमरमर के पात्र में इत्र लाई ... (39) यह देखकर, वह फरीसी जिस ने उसे बुलाया था, अपने मन में सोचने लगा, यदि यह भविष्यद्वक्ता होता तो जान लेता, कि यह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी स्त्री है? क्योंकि वह तो पापिन है।(40) यह सुन यीशु ने उसके उत्तर में कहा; कि हे शमौन मुझे तुझ से कुछ कहना है वह बोला, हे गुरु कह ... (42) जब कि उन के पास पटाने को कुछ न रहा, तो उस ने दोनो को क्षमा कर दियाः सो उन में से कौन उस से अधिक प्रेम रखेगा ... (47) इसलिये मैं तुझ से कहता हूं; कि इस के पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इस ने बहुत प्रेम किया; पर जिस का थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।(48) और उस ने स्त्री से कहा, तेरे पाप क्षमा हुए।(49) तब जो लोग उसके साथ भोजन करने बैठे थे, वे अपने अपने मन में सोचने लगे, यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है? (50) पर उस ने स्त्री से कहा, तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा।।

- एक बार फिर यहां विरोधाभास हैः
  - एक धर्म का पालन करने वाला मनुष्य जो अपने आपको दूसरों से बेहतर समझता है।

    - और -
  - एक धर्म का पालन न करने वाली जो अपने बारे में सच जानती थी – कि वे पापी है और उन्हें उस जन से पापों की क्षमा की आवश्यकता है जो पाप क्षमा कर सकता है। जिसका परिणाम यह था : "तेरे पाप क्षमा हुए।"
  - यह दर्शाता है कि धर्म कितना बड़ा ठोकर का पत्थर है

- यह सच्ची और स्वतन्त्र आराधना को भी दर्शाता है जो बिना धर्म के मनुष्य के आभारी हृदय से आती है जब वह यह पहचान जाते हैं कि यीशु कौन है और उसने हमारे लिए क्या किया।

लूका 11:37–54 हे फरीसियों, तुम पर हाय ! तुम पोदीने और सुदाब का, और सब भांति के साग-पात का दसवां अंश देते हो, परन्तु न्याय को और परमेश्वर के प्रेम को टाल देते हो।

- धार्मिक बलिदान, चाहे यह भला काम करना है परन्तु गलत कारणों के लिए, सच्चे मुल्य की वस्तु के प्रति मनुष्य को अन्धा बना देना – परमेश्वर के लिए प्रेम और लोगों के लिए प्यार। यूहन्ना 3:16 पर विचार करें

- आज बहुत से लोगों के पास फरीसी धर्म और धार्मिकता के झूठी भावना है जो उन्हें ऊंचा उठाती है और दूसरों को तुच्छ दृष्टि से देखती है।

(43) हे फरीसियों, तुम पर हाय ! तुम आराधनालयों में मुख्य मुख्य आसन और बाजारों में नमस्कार चाहते हो।

- धर्म कुछ को दूसरों से ऊंचे स्थान रख देते हैं। (जैसे हिन्दुओं में जाति प्रथा)।

- बहुत से पास्टरों, बिशपों, एल्डरों और डीकनों में भी यह सच्चाई है।

(44) हाय तुम पर ! क्योंकि तुम उन छिपी कब्रों के समान हो, जिन पर लोग चलते हैं, परन्तु नहीं जानते।।

- धर्म अन्धा कर देता और यह घातक भी हो सकता है।

(46) हे व्यवस्थापकों(पुराने नियम की व्यवस्था में निपुण), तुम पर भी हाय ! तुम ऐसे बोझ जिन को उठाना कठिन है, मनुष्यों पर लादते हो(धार्मिक कार्य और रीति रिवाज़) परन्तु तुम आप उन बोझों को अपनी एक उंगली से भी नहीं छूते।

- इससे पहले कि कोई अपने भगवान को प्रसन्न करे या दूसरों को प्रभावित करे, धर्म कार्यों, कर्त्तव्यों, बलिदानों और सभी प्रकार की रुकावटों की प्राप्ति को जोड़ देता है।

(52) हाय तुम व्यवस्थापकों पर ! कि तुम ने ज्ञान की कुंजी ले तो ली, परन्तु तुम ने आप ही प्रवेश नहीं किया, और प्रवेश करनेवालों को भी रोक दिया।

- धर्म सच्चे ज्ञान की जगह अपनी मान्यताओं को रख देता है

(53) जब वह वहां से निकला, तो शास्त्री और फरीसी बहुत पीछे पड़ गए और छेड़ने लगे, कि वह बहुत सी बातों की चर्चा करे। (54) और उस की घात में लगे रहे, कि उसके मुंह की कोई बात पकड़ें।।

- जो लोग धर्म के साथ नहीं जुड़ते उन्हें धर्म यदि घृणा से नहीं, तिरस्कार से अवश्य देखता है।

धर्म के मानने वालों के साथ यीशु की समस्याएं जारी रहीः

लूका 13:14–17 हे कपटियों, क्या सब्त के दिन तुम में से हर एक अपने बैल या गदहे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता? (16) और क्या उचित न था, कि यह स्त्री जो इब्राहीम की बेटी है जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बान्ध रखा था, सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाती?

- धर्म रीति रिवाज़ों के पालन को बहुत महत्व देता है और लोगों को बहुत कम महत्व या बिलकुल नहीं। यह सच्ची मसीहयत के बिलकुल विपरीत है।

लूका 14:2–6 इस पर यीशु ने व्यवस्थापकों और फरीसियों से कहा; क्या सब्त के दिन अच्छा करना उचित है, कि नहीं? परन्तु वे चुपचाप रहे।(4) तब उस ने उसे हाथ लगा कर चंगा किया, और जाने दिया।(5) और उन से कहा; कि तुम में से ऐसा कौन है, जिस का गदहा या बैल कुएं में गिर जाए और वह सब्त के दिन उसे तुरन्त बाहर न निकाल ले? (6) वे इन बातों का कुछ उत्तर न दे सके।।

- धर्म में असंगताएं भरी हैं।

धर्म का संक्षेप सार और उसके बारे में परमेश्वर के विचारों को हम इस अनुच्छेद में देखते हैंः

लूका 16:14–15 फरीसी जो लोभी थे, ये सब बातें सुनकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगे।(15) उस ने उन से कहा; तुम तो मनुष्यों के साम्हने अपने आप को धर्मी ठहराते होः परन्तु परमेश्वर तुम्हारे मन को जानता है, क्योंकि जो वस्तु मनुष्यों की दृष्टि में महान है (धर्म का घमण्ड और यीशु मसीह के बलिदान के स्थान पर दूसरे बलिदान), वह परमेश्वर के निकट घृणित है।

- बिलकुल यही धर्म करता है, सत्य को और एकमात्र परमेश्वर के द्वारा दिए गए बलिदान की उपेक्षा करते हुए, वो मनुष्य को धर्मी ठहराने का मार्ग बताता है, या स्वयं को धर्मी ठहराने का प्रयास करता है।

यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। यूहन्ना 14:6

और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें।। प्रेरितों के काम 4:12

यह सभी सच्चाईयां सभी धर्मों में देखी जा सकती हैं :